



गुरुजी का आश्रम-2

“अब गुरुजी ने अपने लंड को मेरी योनि-द्वार पर रख दिया। मैं उनके चेहरे को निहार रही थी, मगर मेरा ध्यान योनि से सटे उनके लिंग पर था। मैं इंतज़ार कर रही थी कि कब उनका लिंग मेरी योनि की तृष्णा को शांत करेगा। उत्तेजना से मेरे भगोष्ठ अपने आप थोड़े से खुल गए थे। [...] ...”

Story By: (lover)

Posted: Tuesday, August 2nd, 2005

Categories: [कोई मिल गया](#)

Online version: [गुरुजी का आश्रम-2](#)

गुरुजी का आश्रम-2

अब गुरुजी ने अपने लंड को मेरी योनि-द्वार पर रख दिया। मैं उनके चेहरे को निहार रही थी, मगर मेरा ध्यान योनि से सटे उनके लिंग पर था। मैं इंतज़ार कर रही थी कि कब उनका लिंग मेरी योनि की तृष्णा को शांत करेगा। उत्तेजना से मेरे भगोष्ठ अपने आप थोड़े से खुल गए थे।

“इसे अपने हाथों से अन्दर लो !” उन्होंने कहा।

मैंने फ़ौरन उसके लिंग को पकड़ कर अपने योनि-लब खोल कर उसमें रखा, गुरुजी ने एक जोर का झटका मारा और पूरा लिंग सरसराता हुआ अन्दर तक चला गया।

“ऊँऊँ ऊँऊँ फ़फ़फ़फ़ आँऊँ आँआ हूँहूँहूँहूँ !” मैं चीख उठी। ऐसा लगा कि उनका तगड़ा लिंग मेरे पूरे बदन को चीर कर रख देगा। मैंने अपनी टांगों से गुरुजी की कमर को जकड़ रखा था, मुँह से चीख निकल रही थी मगर टांगों से उनके कमर को अपनी योनि की तरफ ठेल रही थी।

“धीरे गुरुजी ! दर्द कर रहा है ! आपका ये बहुत बड़ा है !!”

गुरुजी धीरे धीरे अपना लिंग मेरी योनि से बाहर तक खींचा साथ साथ मैं झड़ गई। ऐसा लगा कि उनका लिंग पिस्टन की तरह बाहर आते हुए अपने साथ मेरे योनि-रस को खींचता हुआ ले आ रहा है।

फ़िर उन्होंने अपने लिंग को हरकत दे दी। मेरा दो बार रस निकल चुका था इसलिए मैं हाँफने लगी थी। लेकिन उनके धक्कों ने कुछ ही देर में मुझे दोबारा गरम कर दिया। कुछ देर तक इसी तरह मुझे चोदने के बाद मेरे बदन से उतर गए। अब वो बिस्तर पर सीधे लेट

गए, मैंने उठकर उनके लिंग को देखा मेरे रस से भीगा हुआ मोटा काला लिंग मुझे पागल कर रहा था। मैंने उनकी कमर के दोनों ओर अपने घुटनों को रख कर अपने योनि-छिद्र को असमान की ओर तने लिंग पर रखा, अपने हाथों से लिंग को ठीक से छिद्र में करके उनकी छातियों पर दोनों हाथ रख कर उन्हें सहलाते हुये अपने चूतड़ों को नीचे की ओर दबाया। उसका लिंग कुछ अन्दर तक घुस गया। फिर मैंने अपना सारा बोझ उनके ऊपर डाल दिया और उनका लिंग मेरी योनि में अन्दर तक घुसता चला गया।

मैं उनके लिंग पर अपनी चूत को ऊपर नीचे करने लगी। उन्होंने मेरी छातियों को पकड़ कर दबाना शुरू किया, एक छाती के अग्र भाग को जोर से खींचा तो उसमें से दूध के धार निकल कर गुरुजी के चेहरे पर पड़ी। उन्होंने मुँह खोल कर उस धार को अपने मुँह में समेट लिया। मैं उत्तेजना से पगला गई थी और उनके लिंग को बुरी तरह चोद रही थी, मेरा सिर पीछे की तरफ झटके खा रहा था। मैंने उनकी छातियों को अपनी मुट्ठी में भर लिया और चीख पड़ी- आआहूहूहू !!!

मैंने उनके सीने के बालों को अपनी मुट्ठी में भर कर खींचा साथ ही मैं तीसरी बार झड़ गई, पट पट करके जाने कितने बाल टूट कर मेरी मुट्ठी में आ गए। मैं निढाल सी उनके सीने पर लेट गई।

“अब बस भी करो !” मैंने उनके होंठों को चूमते हुये कहा, “मार ही डालोगे क्या आज ?”

उसने मुझे अपने ऊपर से हटाया और मुझे खींच कर बेड के किनारे पर हाथ और पैरों के बल ऊँचा किया। तभी वही लडकी दोबारा आकर मेरी चिकनी हो रही योनि को अच्छी तरह से साफ कर गई। फिर गुरुजी ने खुद बेड के पास जमीन पर खडे होकर पीछे से मेरी चूत में अपना लंड डाल दिया. और फिर से जोर जोर से धक्के मारने लगे। मैं उसके लंड के हर धक्के के साथ चीख उठती। पूरे कमरे में मेरी उत्तेजना और दर्द मिश्रित आनन्द भरी आवाजें गूँज रही थी। ऐसी चुदाई मुझे पहली बार मिल रही थी। वरना जीवन तो अधिक से अधिक

दस मिनट ही सम्भल पाते हैं।

कोई घंटे भर तक इसी तरह चोदने के बाद उन्होंने अपने वीर्य से मेरी पूरी योनि को पूरी तरह से भर दिया। मैं बिस्तर पर निढाल हो कर गिर पडी, गुरुजी मेरे बदन पर ही कुछ देर तक पसरे रहे, फिर बगल में लेट गए। मेरी योणी से उनका वीर्य निकल कर सफ़ेद चादर को गीला कर रहा था। हलकी सी खटाक की आवाज आई तो मैं समझ गई कि मोनी बाहर चली गई है। मैं गुरुजी से बेतहाशा लिपट गई।

“आप मुझे अपनी छत्रछाया में ले लो ! मैं अब आपसे दूर नहीं जा सकती !” मैंने उनके होंठों को चूमते हुए कहा। उन्होंने मुझे बाँहों में भर कर करवट लेकर मुझे अपने सीने पर लिटा लिया, मैंने नीचे सरकते हुये उनके सीने को चूमा और सीने के बालों पर उँगलियों से खेलने लगी। फिर जीभ निकाल कर उनके चूचुकों पर फिराने लगी। फिर मेरे होंठ सरकते हुये नीचे की ओर फिसलने लगे, उनके लिंग के चारों ओर फैले घने बालों में अपने चेहरे को रख एक गहरी सांस ली और जीभ को उनके शिथिल पड़े लिंग पर फिराने लगी। उनकी उँगलियाँ मेरे बालों पर फिर रही थी।

“क्यों मन नहीं भरा ?” उन्होंने पूछा।

“उम्म्मऽऽ ! नहींऽऽऽ !”

उन्होंने मेरे वक्ष और उनकी चोटियों को मसलते हुए अपने लिंग की ओर संकेत करते हुए पूछा, “कैसा लगा ये ?”

“बहुत अच्छा. जी करता है इसे अपनी योनि में ही डाले रखूँ !” मैंने उसके ढीले पड़े लिंग को वापस मुँह में डाल लिया। थोड़ी ही देर में वो फिर से अगली लड़ाई के लिए तैयार हो गया।

उन्होंने उठ कर लाइट जला दी। मैंने शर्म से अपने चहरे को हाथों से ढक लिया। गुरुजी ने बिस्तर पर आकर मेरे हाथों को चेहरे पर से हटा दिया। मैंने झिझकते हुये आँखें खोली तो उसका मोटा तगड़ा लिंग आँखों के सामने तना हुआ था। मुझे बिस्तर पर लिटा कर मेरी टांगों को मोड़ कर सीने से लगा दिया, अब एक तकिया लेकर मेरी कमर के नीचे रख दिया, ऐसा करने से मेरी योनि उँची हो गई थी।

“देखना अब कैसे जाता है मेरा लिंग तुम्हारे अन्दर !” कह कर वो अपना लिंग मेरी योनि से सटा कर बहुत धीरे धीरे अन्दर करने लगे।

मेरी योनि पूरी तरह फ़ैल गई थी। ऐसा लग रहा था मानो कोई मोटा बांस मेरी योनि में डाला जा रहा हो। पूरी तरह अन्दर करने के बाद इस बार बहुत तसल्ली से मुझे चोदने लगे। मैं भी नीचे से कमर उठा कर उनका साथ देने लगी। काफ़ी देर तक इसी तरह चोदने के बाद उन्होंने बिस्तर के किनारे पर बैठ कर मुझे अपनी गोद में बिठा लिया और चोदने लगे। फिर मुझे दीवार से सट कर जमीन से उठा लिया, मैंने अपनी टांगें उनकी कमर पर बाँध दी और उनके लिंग के खूँटे पर झूल गई। कई तरह से मुझे चोदने के बाद वापस बिस्तर पर लाकर गुरुजी मेरी योनि में अपना रस डाल दिया। उसके बाद हम थक कर सो गए।

सुबह छः बजे मोनी के उठाने पर मेरी नींद खुली। मैं नग्न अवस्था में ही सो रही थी। मैंने बगल में देखा, गुरुजी पहले ही उठ कर जा चुके थे।

मैं थकान महसूस कर रही थी, मोनी ने सहारा देकर मुझे उठाया, “रात कैसी गुजरी ?” मोनी ने पूछा।

मैं उसकी तरफ देख कर मुस्कुरा उठी, जो उसे समझाने के लिए काफ़ी था। मैंने आगे बढ़ने को कदम बढ़ाया तो मेरे कदम लड़खड़ा उठे। मोनी सहारा देकर मुझे बाथरूम की तरफ ले गई, “नहा लो, थकान उतर जायेगी !”

वो मुझे बाथटब में रगड़ रगड़ कर नहलाने लगी। गुलाब के फूलों से भरे टब में नहाते हुये मेरा मन खुशी से भर उठा। मैं नहा कर बाहर निकली तो मुझे फिर से एक किमोनो औढ़ा दिया गया। मेरी कमर में डोरी से किमोनो को बाँध दिया। सामने से पूरा खुला होने के कारण चलने पर मेरी नग्न टाँगें बाहर निकल आती थी।

अब मुझे सहारे की जरूरत महसूस नहीं हो रही थी मगर मोनी ने मेरा एक हाथ थाम रखा था। कमरे में आते ही मानो पूर्व-नियोजित तरीके से एक युवती एक ग्लास में वैसा ही कोई तरल पदार्थ ले कर आई जैसा पिछली रात मैंने लिया था। इसे पीते ही मेरे बदन में एक नई ताजगी आनी शुरू हो गई। कुछ ही देर में मैं एक दम तारो-ताजा हो गई।

अब मुझे लेकर मोनी एक हॉल में आ गई। हॉल के बीचों बीच एक बिस्तर सजा हुआ था। उस पर सुर्ख लाल रंग की रेशमी चादर बिछी हुई थी। बिस्तर के चारों ओर बारह कुर्सियों में आश्रम के सारे शिष्य बैठे हुए थे। बिस्तर के पास एक सिंहासन पर गुरुजी बैठे हुए थे। मोनी मुझे लेकर चलते हुए बिस्तर के पास आकर रुकी, उसने मेरे किमोनो की डोरी को खोल दिया, किमोनो सामने से खुल गया, अन्दर कुछ नहीं पहना होने के कारण टाँगों के बीच का उभार सामने दिख रहा था।

मोनी थोड़ी दूर हट गई, गुरुजी उठे और मेरे पीछे आकर मेरे खुले हुए गाऊन को मेरे कंधे से उतार दिया। मेरा गाऊन बदन पर से फिसलता हुआ नीचे गिर गया। मैं उन चौदह जोड़ी प्यासी अँखियों के सामने बिल्कुल नग्न अवस्था में खड़ी थी।

गुरुजी ने मुझे कंधे से पकड़ कर उसी जगह पर चारों ओर घुमाया, फिर कमर से मुझे थामे हुये धीरे धीरे चलते हुए एक एक शिष्य के पास से घुमाया। सब भूखी नजरों से मेरे बदन को निहार रहे थे।

गुरुजी ने कहा, "ये है रुचिका ! आज से ये हमारे आश्रम को ज्वाइन कर रही हैं !"

सबने खुशी से तालियाँ बजाई ।

“संस्था में शामिल करने के लिए जो जो रस्म होती हैं उन्हें आरम्भ किया जाए !”

कहकर गुरुजी जाकर अपनी स्थान पर बैठ गए । तभी एक लड़की एक चाँदी का कटोरा लेकर आई । मोनी ने उसे मेरे हाथ में देते हुये कहा, “इसे पी लो !”

उस पात्र में गाढ़ा मक्खन की तरह कुछ रखा था । मैंने अपने होंठों से उसे लगा कर एक घूँट भरा तब पता चला कि वो वीर्य था ।

“यह हमारे आश्रम के सारे शिष्यों का वीर्य है, इसे पूरा पी लो !” मोनी ने कहा ।

मैंने घूँट भर भर कर सारा वीर्य पी लिया ।

“आज से तुम संस्था के किसी भी मर्द के साथ सम्भोग करने के लिए स्वतंत्र हो और कोई भी जब चाहे तुम्हें भोग सकता है । तुम इन्कार नहीं करोगी ।” गुरुजी ने कहा ।

अब मोनी ने मुझे बिस्तर पर बिठा दिया । दो लड़कियाँ दो खाली कटोरे लेकर आई । उन्हें मेरे स्तनों के नीचे रख कर मेरे चूचुकों को पकड़ कर उनमे से दूध निकालने लगी । ऐसा लग रहा था मानो मैं कोई औरत नहीं गाय हूँ जिसका दूध निकाला जा रहा है । मेरी छातियों को वो तब तक दुहती रही जब तक आखिरी बूँद तक नहीं निकल गया । मेरी दोनो छातियाँ उनके मसलने की वजह से लाल हो गई थी और दुःख रही थी ।

दूध की कटोरियाँ लेकर वो युवतियाँ वहाँ मौजूद एक-एक आदमी के पास जाती और वो आदमी उस से कुछ दूध पीता । ऐसे करके सारे आदमियों ने मेरा दूध चखा ।

अब सारे शिष्य खड़े हो गए और अपने अपने कपड़े उतार दिए । सिर्फ़ गुरुजी ही कपड़े पहने हुए थे । अपने चारों ओर इतने सारे खड़े लंड देख कर मेरा बदन सनसनाने लगा । सारे

मर्द अपने अपने स्थान पर बैठ गए।

अब मोनी ने मुझे बिस्तर पर हाथों और घुटनों के बल झुका दिया। मैं एक ऐसी कुतिया लग रही थी जो गरमाई हुई हो। मेरी योनि में रस से छूटने लगा। तभी कुछ हुआ कि मेरा बिस्तर धीरे धीरे घूमने लगा। रफ्तार बहुत धीमी थी लेकिन इससे मैं बारी बारी हर आदमी के सामने से गुजर रही थी। तभी दो आदमी उठे और मेरे दोनों तरफ आकर खड़े हो गए।

एक ने मेरे पीछे से बिना मुझे किसी तरह उत्तेजित किए अपना लंड एक झटके से मेरे अन्दर कर दिया। अगले झटके में तो उसका लिंग पूरी तरह मेरी योनि में समा गया और उसके अन्दकोष मेरी जांघों से टकरा गए।

“आऽऽआअह ऊऊऊऊहू हूहूहूछ !!” बस यही निकला मेरे मुँह से।

फिर वो जोर जोर से धक्के मारने लगा। दूसरा मेरे सामने आया और मेरी थोड़ी को पकड़ कर मेरे चेहरे को ऊपर उठाया। मेरे चेहरे पर फैले हुए मेरे बालों को हटा कर नीचे झुक कर मेरे होंठों को एक बार चूमा, फिर वो खड़ा हो गया। मेरी नजरें अगले कदम के इन्तजार में उसके चहरे पर जमी हुई थी।

“इसे मुँह में लो ! उसने अपने लिंग की तरफ इशारा किया।

मैंने देखा उसका तगड़ा लिंग मेरे होंठों से बस कुछ ही इंच दूरी पर है, मेरे होंठ अपने आप खुलते चले गए। उसने धीरे से मेरे सिर को थामते हुए अपने लिंग को मेरे मुँह में डाल दिया। मैंने देखा लिंग से भीनी भीनी सुगंध आ रही थी।

अब दोनो तरफ से मेरी ठुकाई चालू हो गई। दोनों जोर जोर से मुझे ठोक रहे थे और सारे आदमी अपनी अपनी जगह पर नग्न बैठे हुए मेरी चुदाई देख रहे थे। सबके हाथ अपने अपने लिंग को सहला रहे थे। जो मेरी योनि में ठोक रहा था उसने कोई १५ मिनट तक मुझे

चोद कर अपना लिंग एकदम से अन्दर तक डाल दिया और उसके लिंग से निकली वीर्य की धारा मेरी योनि को भरने लगी। उसके इस तरह जोर से धक्का मारने के कारण सामने वाले का लिंग मेरे मुँह में अन्दर तक घुस गया, साथ ही उसका लिंग भी झटके मारने लगा। वो भी अपने वीर्य से मेरे मुँह को भरने लगा। मैं भी उनके साथ ही झड़ गई।

दोनों ने अपना वीर्य मेरे अन्दर खाली करने के बाद अपने अपने लिंग बाहर निकाले, फिर मुझे उन दोनों के लिंग को चाट चाट कर बिल्कुल साफ करना पड़ा।

दोनों अपनी अपनी जगह पर जा कर बैठ गए। मैं जोर जोर से हांफ रही थी।

फिर दो और आदमी आकर पहले की तरह ही मेरी चुदाई करने लगे। दोनों काफ़ी देर तक टोक कर मेरे अन्दर खाली हो गए। उनके बैठने पर दो और उठ कर उनकी जगह आ गए।

तीसरा दौर खत्म होते होते मेरे हाथों में और अपना बोझ सम्हाले रखने की ताकत नहीं बची और मैं मुँह के बल बिस्तर पर गिर पडी। अभी भी छः आदमी बचे थे।

अब तीन आदमी उठ कर आए।

एक मेरी बगल में आकर लेट गया। उसका खड़ा लिंग ऊपर की तरफ खड़ा हुआ था। बाकी दोनों ने मुझे बाँहों से पकड़ कर उठाया और मेरी टांगों को चौड़ा कर के उसके लिंग पर मेरी योनि को टिकाया, मेरी योनि से रस टपक कर बिस्तर पर गिर रहा था। एक धार उसके लिंग को भिगोती हुई नीचे जा रही थी। कुछ देर तक मैं उस अवस्था में रही फिर मैंने अपना बोझ उसके लिंग पर डाल दिया और उसका मोटा लिंग मेरी योनि में घुसता चला गया।

मैं अपने हाथ उसके सीने पर रख कर अपनी कमर को धीरे धीरे ऊपर नीचे करने लगी मगर उसका तो इरादा ही कुछ और था। उसने मेरे चूचुकों को पकड़ कर अपनी ओर खींचा, मैं

उसके सीने से सट गई। उसने मेरे बदन को अपनी बाँहों में समां कर सख्ती से अपने से लिपटा लिया। मेरी मोटी मोटी छातियाँ उसके सीने में पिसी जा रही थी।

एक लडकी एक कटोरे में कोई तेल लेकर आई। मोनी ने मेरे दोनो चूतड़ों को अलग करते हुए मेरी गाण्ड के छिद्र पर कुछ तेल गिराया और अपनी उँगलियों से अन्दर तक उसे अच्छी तरह लगाने लगी।

“नहींऽऽईई... प्लीज़ऽऽ..यह..मुझ से ...नहींईई.. ..होगाऽऽ॥” मैं कसमसा उठी।

“मेरी फट जाएगीऽऽईई. प्लीज़ !!!... मैं सबको खुश कर दूँगी ऽऽई मगर वहाँ नहींऽ।...”

मगर वहाँ मेरी विनती सुनने वाला कोई नहीं था।

एक जोर के धक्के से उस आदमी ने अपने लिंग का सुपाड़ा मेरी गाण्ड में डाल दिया।

“आऽ... अऽऽऽआआआ आआअह ह्ह्ह्ह म्माअआ” मैं चीख उठी।

दो और जोर जोर के झटके लगे और पूरा लिंग मेरी गाण्ड के अन्दर था।

मैं दर्द से दोहरी हुई जा रही थी। मोनी पास आकर मेरे चेहरे को सहला रही थी और धैर्य रखने को कह रही थी।

अपना पूरा लिंग अन्दर डाल कर वो कुछ देर रुका, फिर दोनों आगे और पीछे से मुझे चोदने लगे। अब तीसरे ने मेरे पास आकर मेरे चेहरे को एक ओर घुमा कर अपना लिंग मेरे मुँह में डाल दिया। इस तरह की यौन क्रीड़ा मैंने सिर्फ विदेशी नग्न फ़िल्मों में देखी थी या सुनी थी मगर आज यही मेरे साथ हो रहा था।

तीनों ने जोर जोर से मुझे ठोकने के बाद मेरे तीनों छेदों में अपने अपने गर्म-गर्म वीर्य भर

दिया। उनके बाद बाकी बचे तीनों ने भी मुझे उसी तरह चोदा।

कोई दो-ढाई घण्टे की चुदाई के बाद मुझमें तो उठकर खड़े होने की भी ताकत नहीं बची थी, पूरा बदन बुरी तरह दुःख रहा था। मोनी और एक युवती ने आकर मुझे उठाकर गुरुजी के कदमों में बिठा दिया, गुरुजी ने अपना लिंग निकाल कर मेरे सिर पर रखा, फिर उसे नीचे सरकाते हुए मेरे मुँह में डाल दिया। उनके लिंग को मैंने चूस चूस कर खल्लास किया।

फिर सब उठ कर उस कमरे से निकल गए, सिर्फ मैं मोनी और एक लड़की बची थी।

मोनी ने मुझे उठाकर मेरे बदन को पोंछा और मुझे मेरे कपड़े पहनाए, मुझे मेरी कार की पिछली सीट पर बैठा कर एक शिष्य मुझे मेरे घर तक छोड़ आया। मेरे पति जीवन लाल काम पर जा चुके थे, इसलिए मैं बच गई।

मैं घर आकर खूब नहाई और खाना खाकर जम कर नींद ली। अपने बच्चे को बोतल से दूध पिलाया क्योंकि कुछ बचा ही नहीं था उसके लिए।

शाम तक एकदम तरोताज़ा हो गई थी और बन-संवर कर माथे पर सिन्दूर और मंगलसूत्र को ठीक कर अपने पति के आने का इंतज़ार करने लगी !

sexpussy.lover@yahoo.com

Other stories you may be interested in

शादी में प्यासी भाभी की चुदाई का मौक़ा-2

अब तक की इस कहानी के पहले भाग में आपके जाना कि मैं अपनी बाँस के साथ उनकी सहेली के भाई की शादी में आया हुआ था. यहाँ एक मिसेज पाटिल से मुलाकात हुयी. वो बहाने से मेरे होटल रूम [...]

[Full Story >>>](#)

चुलबुली चुदासी भाभी से वीडियो सेक्स चैट और चुदाई

यह मेरी पहली कहानी है जिसमें एक अजनबी शहर में भाभी का साथ मिला और मैंने चूत चुदाई की कहानी लिख दी. वैसे तो मैं कभी कहानियां लिखता नहीं लेकिन अन्तर्वासना पर काफी कहानियां पढ़ के मेरा दिल भी लिखने [...]

[Full Story >>>](#)

विधवा भाभी लंड की प्यासी

नमस्कार दोस्तो, बात आज से करीब दो साल पुरानी है. उस वक्त मेरी उम्र बाईस साल थी. जैसा कि आप सभी जानते ही हैं कि इस उम्र में चुदाई करने का कितना मन करता है. तो मेरा भी इस उम्र [...]

[Full Story >>>](#)

किसी और के नसीब की चूत मुझे मिली

मेरे प्रिय दोस्तो, कैसे हो आप सब ... आशा करता हूँ कि आप सभी मस्त होंगे और होना भी चाहिए. मैं माफी चाहता हूँ, थोड़ा बिज़ी था, इसलिए आप सबसे मुखातिब होने में जरा देरी से आ पाया. मेरी पहली [...]

[Full Story >>>](#)

ट्रेन में मिले हैंडसम लड़के से चुद गई

यह घटना पिछले साल की है. मैं घर से दीवाली की छुट्टियां मना कर वापस अपनी जॉब पर जा रही थी. मेरा बंगलोर के लिए दिल्ली से रिज़र्वेशन था, तो पापा मुझे दिल्ली स्टेशन तक छोड़ कर ट्रेन में बैठा [...]

[Full Story >>>](#)

